International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

21वीं सदी की नवाचार आधारित शिक्षा एवं शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि

बिरेन्द्र कुमार सिंह[1], डॉ. सुधीर सुदाम कावरे[2]

शोध छात्र, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, (छ. ग.)
सह-प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, (छ. ग.)

सारांश

प्राचीन भारत में समाज में शिक्षक का स्थान सर्वोच्च था, शिक्षा वेद एवं पुराणों पर आधारित थी, परिवार प्रथम विद्यालय था तथा शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास था क्योंकि भारतीय ज्ञान की धारा अध्यात्म की नींव पर चलती थी।शिक्षक सदैव समाज में ज्ञान के मार्गदर्शक एवं पथप्रदर्शक रहे हैं। लेकिन आज की तेज़ी से बदलती दुनिया में, जहाँ युवा मन को विकसित करने और आकार देने के लिए अद्यतन ज्ञान आवश्यक है, वहां शिक्षक की भूमिका पाठ्य-पुस्तकों एवं कक्षाओं से कहीं अधिक है। आज के समय में शिक्षक केवल बुद्धि का पोषण नहीं कर रहे हैं, बल्कि हमारे छात्रों को समय के साथ होने वाले बदलाव की माँगों को पूरा करने में मदद करने के लिए मूल्यों, लचीलेपन एवं आत्मविश्वास का भी पोषण कर रहे हैं। एक शिक्षक का प्रभाव केवल परीक्षाओं या परिणामों तक ही सीमित नहीं होता, यह सपनों को प्रेरित करता है, चरित्र का निर्माण करता है एवं पीढ़ियों पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ता जैसे-जैसे शिक्षा तकनीक, नई शिक्षण विधियों और बदलती सामाजिक अपेक्षाओं के साथ विकसित होती जा रही है शिक्षक के धैर्य, सहानुभूति व अनुकूलनशीलता और भी अधिक मूल्यवान हो गये उसके साथ शिक्षक को यह भी याद रखना चाहिए कि हमारे युवाओं का मन अत्यधिक संवेदनशील तकनीक का उपयोग करते समय, उन्हें यह समझना चाहिए कि इस शक्तिशाली उपकरण का बुद्धिमानी से उपयोग किया जाना चाहिए। जैसा कि कहा जाता है: तकनीक एक अच्छा सेवक है, लेकिन एक खतरनाक स्वामी भी, हमारे विद्यार्थियों में यह जागरूकता पैदा करना उसकी सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियों में से एक है साथ ही अपने व्यवसाय से संतुष्टि भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 21वीं सदी की नवाचार आधारित शिक्षा एवं शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द – नवाचार आधारित शिक्षा, शिक्षक, कार्य संतुष्टि, व्यावसायिक विकास, कार्य जीवन संतुलन

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान, कौशल, मूल्यों, विश्वासों और आदतों को सीखने या अर्जित करने की प्रक्रिया शिक्षा प्रायः शिक्षक के मार्गदर्शन में होती है, लेकिन शिक्षार्थी स्वयं भी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। जब एक शिशु मानव जीवन की दुनिया में आता है, तो वह शिक्षा की जटिलता से अनभिज्ञ होता है, लेकिन पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण की सहायता से वह अवधारणाओं को आत्मसात करता है तथा उनके साथ समायोजन करता प्राचीन भारत में समाज में शिक्षक का स्थान सर्वोच्च था, शिक्षा वेद और पुराणों पर आधारित थी, परिवार प्रथम विद्यालय था और शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास था क्योंकि भारतीय ज्ञान की धारा अध्यात्म की नींव पर चलती थी। यदि आज की बात करें तो उस समय से लेकर अब तक बहुत सारे परिवर्तन हुए हैं। आज का समाज प्राचीन समाज की तुलना में बहुत अधिक प्रगतिशील हो गया मानव सभ्यता के विकास के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में विकास ने जो विविध आयाम स्थापित किए गए है उसके कारण शिक्षा को मानव प्रगति का मापदण्ड कहा जाता अतः शिक्षा को सार्थक और प्रभावशाली बनाने के लिए किए जा रहे सतत् प्रयासों का प्रतिफल ही आज के वैज्ञानिक युग में हो रहे नित नये आविष्कार आधुनिक 21वीं शताब्दी में भी भारत को विकसित राष्ट्रों की कोटि में लाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किया गया है उसमें न केवल शिक्षा को उन्नत सम्पन्न बनाने हेतु संकल्प लिया गया बल्कि इस हेतु कुशल प्रबन्धन की पृष्ठभूमि विनिर्मित करने का भी सकल्प लिया गया निःसन्देह इसके लिए ज्ञान की वर्तमान प्रणालियों में परिवर्तन लागा होगा तथा साथ ही नवाचारों, मूल्यांकन व आकलन नवीन के अनुप्रयोग को बढ़ावा देना होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. **21 वीं सदी की शिक्षा का बदलता परिदृश्यअध्ययन करना।**
2. **नवाचार आधारित शिक्षा का अध्ययन करना।**
3. **नवाचार आधारित शिक्षा में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के आयामों का अध्ययन करना।**

अध्ययन विधि - प्रस्तुत अध्ययन में 21वीं सदी की नवाचार आधारित शिक्षा एवं शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का विश्लेषण करने के लिए एक गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें पूर्व के शोध साहित्य, लेख, रिपोर्ट और केस स्टडीज आदि से जानकारी को एकत्र किया गया है जिससे आधुनिक शिक्षा में तकनीकि का उपयोग करना और हमारे भावी विद्यार्थियों के भविष्य को आकार दिया जा सके व शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि को पूर्ण किया जा सके।

वर्तमान समय को डिजिटल युग कहा जाता है क्योंकि जीवन के लगभग हर क्षेत्र में तकनीक की भूमिका बढ़ गई शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। पहले जहाँ शिक्षा मुख्यतः कक्षा, पुस्तक और शिक्षक पर आधारित थी, वहीं आज यह इंटरनेट, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप्स और सोशल मीडिया के माध्यम से एक नए स्वरूप में सामने आ रही डिजिटल तकनीक ने शिक्षा को अधिक लचीला, सुलभ और वैश्विक बना दिया प्राचीन भारतीय परंपरा, जिसने शिक्षा के द्वारा सदैव बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धि को उच्च महत्व दिया है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास था। किन्तु 21वीं सदी ज्ञान, विज्ञान व तकनीकी क्रांति के युग में यह परिवर्तित हो गया है, आज का समाज तीव्र गति से बदल रहा है और शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं।

- प्रथम उद्देश्य **21 वीं सदी की शिक्षा का बदलता परिदृश्यअध्ययन करना** का विश्लेषण

21 वीं सदी की शिक्षा का बदलता परिदृश्य

पारंपरिक शिक्षा में शिक्षक ही ज्ञान का प्रमुख स्रोत होता था और छात्र निष्क्रिय श्रोता होते थे। किंतु आज शिक्षा का परिदृश्य बदलकर शिक्षण-प्रक्रिया को छात्र-केंद्रित (learner-centred) बना दिया गया। अब छात्र केवल जानकारी ग्रहण नहीं करते, बल्कि सक्रिय सहभागिता करते हैं, प्रश्न पूछते हैं और स्वयं ज्ञान का सृजन करते हैं (डार्लिंग-हैमंड एवं अन्य, 2020)। 21वीं सदी में शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक गुरुकुल व पुस्तक-आधारित ज्ञान से बहुत आगे बढ़ चुका है। यह युग तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण एवं ज्ञान-आधारित समाज का युग है, जहाँ शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित न होकर जीवन-परक, रचनात्मक और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप हो गई अर्थात पहले के समय में जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना या पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित था, वहीं अब शिक्षा का स्वरूप नवाचार, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता के साथ तकनीकी दक्षता को विकसित करने पर केंद्रित हो गया। डिजिटल क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), आभासी कक्षाएँ, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, स्मार्ट बोर्ड, एवं मल्टीमीडिया संसाधनों ने शिक्षा को नई दिशा और नया आयाम प्रदान कर नवाचार आधारित कर दिया। आज शिक्षा के नवाचार में बहुत सी तकनीक का उपयोग हो रहा है, किन्तु भविष्य की शिक्षा ज्ञानार्जन के साथ कौशल-आधारित, रचनात्मक और समस्या समाधान परक होगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और बिग डेटा जैसे उपकरण शिक्षा में व्यक्तिगत अधिगम को संभव बनाएंगे (लुकिन एवं उनके सहयोगी, 2016)। इसके साथ ही, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर सहयोग और संवाद का अवसर देंगे, जिससे वे केवल जानकारी के उपभोक्ता नहीं बल्कि सृजनकर्ता भी बनेंगे (मनका एवं रानिएरी, 2017)।किंतु शिक्षा के इन नए क्षितिजों तक पहुँचने के लिए शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षकों को कुछ चुनौतियों से भी जूझना होगा, जैसे डिजिटल असमानता, नैतिकता, साइबर सुरक्षा और शिक्षक छात्र संबंधों में संतुलन बनाए रखना। यदि इन चुनौतियों का समाधान खोज लिया जाए, तो शिक्षा वास्तव में सभी के लिए अधिक न्यायपूर्ण, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण बन सकती है (बोंक एवं ग्राहम, 2012)। इसके साथ ही, 21वीं सदी की शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण पहलू है – वैश्विक दृष्टिकोण अब शिक्षा केवल स्थानीय या राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रही, छात्र विश्व के किसी कोने में बैठकर ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। इस प्रकार यह वैश्विक दृष्टिकोण सभी तक ज्ञान की पहुँच ही नहीं बढ़ाता है अपितु छात्रों में बहुसांस्कृतिक समझ एवं वैश्विक नागरिकता की भावना का भी विकास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बदलते परिदृश्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 21वीं सदी के कौशल जैसे रचनात्मकता, संप्रेषण, आलोचनात्मक सोच और सहयोग को शिक्षा के केंद्र में रखा जाएगा (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)। इसके लिए पाठ्यक्रम में लचीलापन, बहुविषयक दृष्टिकोण और तकनीकी एकीकरण पर विशेष बल दिया गया। शिक्षा का यह बदलता परिदृश्य शिक्षकों के लिए भी नई चुनौतियाँ और अवसर लेकर आया। अब

शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि मार्गदर्शक (mentor) एवं सहायक (facilitator) की भूमिका निभा रहे हैं। डार्लिंग-हैमंड एवं अन्य (2020) का मानना है कि शिक्षक यदि इस नए परिदृश्य में तकनीकी और नवाचार आधारित कौशल अपनाते हैं, तो वे न केवल विद्यार्थियों के लिए बेहतर अवसर पैदा कर सकते हैं, बल्कि स्वयं की पेशेवर संतुष्टि को भी बढ़ा सकते हैं।

- द्वितीय उद्देश्य **नवाचार आधारित शिक्षा का अध्ययन करना** का विश्लेषण

नवाचार आधारित शिक्षा की अवधारणा

21वीं सदी में शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता तक सीमित न होकर विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान की क्षमता और तकनीकी दक्षता का विकास करना है। इसी संदर्भ में नवाचार आधारित शिक्षा (Innovation-based Education) एक ऐसी अवधारणा के रूप में उभरी है, जिसका लक्ष्य शिक्षा को अधिक प्रासंगिक, व्यावहारिक और जीवन-उन्मुख बनाना। नवाचार आधारित शिक्षा का मूल अर्थ है-शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में नवीन विचारों, विधियों, तकनीकों और रणनीतियों का समावेश करना, जिससे विद्यार्थी केवल जानकारी ग्रहण करने वाले न बनकर ज्ञान का सृजन करने वाले बनें (स्चलेचटी, 2011)। इसमें पारंपरिक रटंत पद्धति की जगह प्रयोगात्मक अधिगम (experiential learning), परियोजना कार्य (project-based learning), सहयोगात्मक शिक्षा (collaborative learning), और समस्या-आधारित शिक्षा (problem-based learning) को प्रोत्साहित किया जाता है। इसका अर्थ है कि शिक्षा अब केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न होकर विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजने के योग्य बनाए। नवाचार आधारित शिक्षा केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह शिक्षकों की भूमिका को भी गहराई से प्रभावित करती है। अब शिक्षक केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं रह गए, बल्कि वे मार्गदर्शक, प्रेरक के साथ सह-अध्येता की भूमिका निभा रहे हैं। 21वीं सदी का शिक्षक छात्रों में सृजनशीलता सृजित करने वाला, तकनीकी उपकरणों के साथ संयोजन बैठाने वाला तथा वास्तविक जीवन से जुडी जीवनपरक शिक्षा देने वाला व्यक्तित्व बन गया। यह परिवर्तन शिक्षण व्यवसाय को अधिक चुनौतीपूर्ण तो बनाता ही है, साथ ही यह अवसर भी प्रदान करता है कि शिक्षक अपनी व्यावसायिक संतुष्टि को नए स्तर पर अनुभव करें।

नवाचार आधारित शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका में परिवर्तन

21वीं सदी में शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक रटंत और पुस्तक केन्द्रित पद्धति से निकलकर नवाचार-आधारित, छात्र-केन्द्रित और तकनीकी रूप से समृद्ध हो गया है। इस बदले हुए शैक्षिक परिदृश्य ने शिक्षकों की भूमिका को भी गहराई से प्रभावित किया है, जहाँ पहले शिक्षक को केवल ज्ञान संप्रेषक के रूप में देखा जाता था, वहीं अब उनकी भूमिका मार्गदर्शक, प्रेरक, शोधकर्ता, और सह-अध्येता के रूप में विकसित हो गई है (डार्लिंग-हैमंड एवं अन्य, 2020)

- **ज्ञान संप्रेषक से सीखने के सहायक तक**

पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक ही ज्ञान का प्रमुख स्रोत थे और छात्र निष्क्रिय श्रोता। किंतु आज के डिजिटल युग में सूचना हर किसी की पहुँच में इस कारण शिक्षक का कार्य सिर्फ ज्ञान देना ही नहीं अपितु विद्यार्थियों को जीवन में आने वाली समस्याओं के मार्गदर्शन करना है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005 में भी शिक्षक को एक सहायक के रूप में माना गया है।

- **तकनीकी दक्षता एवं डिजिटल नवाचार**

21वीं सदी का शिक्षक तकनीकी रूप से दक्ष होना आवश्यक स्मार्ट क्लासरूम, ई-लर्निंग, वर्चुअल लैब, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित उपकरणों का उपयोग अब शिक्षा का हिस्सा बन चुका यूनेस्को (2015) का कहना है कि तकनीकी समावेशन से शिक्षक अपनी शिक्षण शैली को अधिक प्रभावशाली एवं आकर्षक बना सकते हैं। अब शिक्षक को तकनीक का प्रभावी उपयोगकर्ता भी होना पड़ता।

- **मार्गदर्शक एवं प्रेरक की भूमिका**

नवाचार आधारित शिक्षा में शिक्षक छात्रों की रचनात्मकता व आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करते हैं। वे छात्रों को केवल उत्तर नहीं बताते, बल्कि उन्हें प्रश्न पूछने तथा नए समाधान खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। स्चलेचटी (2011) का मानना है कि शिक्षक की सबसे बड़ी भूमिका छात्रों को "संलग्न (engaged)"करना है, जिससे वे सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक के साथ जीवन में सार्थक अनुभव के रूप में देखें।

- **जीवन-परक शिक्षा एवं वैश्विक दृष्टिकोण**

आज का शिक्षक विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़कर शिक्षा देता ओइसीडी (2018) के अनुसार, शिक्षक को विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टिकोण, बहुसांस्कृतिक समझ और वैश्विक नागरिकता के लिए तैयार करना चाहिए। इसका अर्थ है कि शिक्षक अब केवल स्थानीय स्तर पर नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर शिक्षा को सार्थक बनाने की भूमिका निभा रहे हैं।

- **शोधकर्ता एवं आजीवन अधिगामी**

21वीं सदी की शिक्षा ने शिक्षक को आजीवन अधिगामी बनने के लिए प्रेरित किया नए ज्ञान, तकनीकों और पद्धतियों से अवगत रहना अब आवश्यक हो गया । भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षक को सतत् पेशेवर विकास (CPD) के अवसर प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे बदलते समय के अनुरूप अपनी भूमिका निभा सकें।

- **सहयोगात्मक भूमिका**

अब शिक्षा केवल शिक्षक व छात्र के बीच नहीं, बल्कि शिक्षक-छात्र-समाज की त्रिकोणीय प्रक्रिया बन गई शिक्षक सहयोगात्मक अधिगम एवं समूह कार्य को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे विद्यार्थी सामाजिक कौशल तथा टीम वर्क जैसी क्षमताएँ अर्जित कर सकें (डार्लिंग-हैमंड एवं अन्य,2020)।

- तृतीय उद्देश्य **नवाचार आधारित शिक्षा में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के आयामों का अध्ययन करना**

शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि शिक्षा की गुणवत्ता एवं छात्रों के अधिगम परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती यदि शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट व प्रेरित रहते हैं, तो वे विद्यार्थियों के साथ अधिक समर्पण, सकारात्मकता व रचनात्मकता के साथ जुड़ते हैं। नवाचार आधारित शिक्षा, जहाँ एक ओर शिक्षकों को नए प्रयोग करने, अपनी शिक्षण शैली को विविध रूपों में प्रस्तुत करने और छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का अवसर देती है, वहीं दूसरी ओर यह उनसे निरंतर तकनीकी अद्यतन, कौशल विकास और समय प्रबंधन की अपेक्षा भी करती है। इस प्रक्रिया में कई बार शिक्षकों को तनाव, कार्य-भार और संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है, जो उनकी संतुष्टि को प्रभावित कर सकती हैं। फिर भी, यह सत्य है कि नवाचार आधारित शिक्षा से शिक्षकों को अपने पेशेवर जीवन में नवीनता, आत्मसंतोष एवं रचनात्मक आनंद प्राप्त होता जब शिक्षक अपने विद्यार्थियों को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रखकर वास्तविक जीवन की समस्याओं का समाधान सिखाते हैं, जब वे उन्हें प्रोजेक्ट, समूह कार्य, प्रस्तुतिकरण तथा डिजिटल संसाधनों के माध्यम से सीखने का अवसर देते हैं, उस प्रकार का अनुभव स्वयं शिक्षकों के लिए भी अधिक सार्थक एवं संतोषजनक होताहै।
अतः 21वीं सदी की नवाचार आधारित शिक्षा और शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ नवाचार शिक्षा प्रणाली को आधुनिक और प्रासंगिक बनाता है, वहीं यह शिक्षकों को आत्म-विकास, पेशेवर संतोष और समाज में महत्वपूर्ण योगदान का अवसर भी देता है।

शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि के आयाम

- **कार्य-परिस्थिति (Work Environment)**

कार्य-परिस्थिति में विद्यालय का भौतिक वातावरण, संसाधनों की उपलब्धता, सहकर्मियों का सहयोग तथा प्रशासनिक व्यवहार शामिल हैं। जब शिक्षकों को एक सहयोगी और प्रेरक वातावरण मिलता है, तो वे अधिक समर्पण और संतोष के साथ कार्य करते हैं। लॉक (1976) ने कहा कि अनुकूल कार्य-परिस्थिति शिक्षक की उत्पादकता और मानसिक संतोष दोनों को बढ़ातीहै। मिश्रा (2018) ने अपने शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यालय का सहयोगात्मक वातावरण शिक्षक की कार्य-संतुष्टि का एक प्रमुख निर्धारक है।

2. वेतन और आर्थिक सुरक्षा (Salary and Financial Security)

वेतन, भत्ते और आर्थिक स्थिरता शिक्षक की संतुष्टि को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। उचित वेतन शिक्षकों को आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सम्मान एवं व्यावसायिक गर्व प्रदान करता है। हर्ज़बर्ग, मौसनर, स्नाइडरमैन, (1959) के Two-Factor Theory के अनुसार, वेतन एक “hygiene factor”है -इसका अभाव असंतोष पैदा करता है, परंतु इसकी उपस्थिति केवल असंतोष को कम करती है, प्रेरणा को नहीं बढ़ाती। शर्मा (2000) ने अपने अध्ययन निष्कर्ष में बताया कि निजी विद्यालय के शिक्षकों में वेतन असमानता के कारण असंतोष अधिक पाया जाता है।

- **प्रशंसा और मान्यता (Recognition and Appreciation)**

शिक्षक की उपलब्धियों एवं प्रयासों की समय-समय पर सराहना उसके कार्य-संतुष्टि को प्रबल करती है। जब शिक्षकों के कार्य का सार्वजनिक रूप से सम्मान किया जाता है, तो वे अपने दायित्वों के प्रति और अधिक समर्पित हो जाते हैं। हर्ज़बर्ग (1966) ने शिक्षक की उपलब्धियों एवं प्रयास को एक प्रेरक कारक माना जो व्यक्ति के आत्मसम्मान और प्रेरणा को बढ़ाता है। कुलकर्णी (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यालय स्तर पर मान्यता मिलने से शिक्षकों में सकारात्मक भावनाएँ बढ़ती हैं व असंतोष कम होता है।

- **व्यावसायिक विकास के अवसर (Opportunities for Professional Growth)**

निरंतर प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ उच्च शिक्षा के अवसर और शोध कार्य में भागीदारी शिक्षकों के आत्मविकास ओर संतुष्टि का आधार है।
कुमार एवं रानी (2016) ने उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि प्रशिक्षण ओर प्रोन्नति के अवसर शिक्षक संतुष्टि के महत्वपूर्ण निर्धारक ओइसीडी (2020) की Teaching and Learning International Survey (TALIS) रिपोर्ट के अनुसार, वे शिक्षक जो नियमित रूप से पेशेकर विकास में भाग लेते हैं, उनकी कार्य-संतुष्टि का स्तर 22% अधिक होता है।

- **विद्यालयी नेतृत्व एवं प्रशासनिक समर्थन (Leadership and Administrative Support)**

प्रधानाचार्य या प्रबंधन का व्यवहार, निर्णय-प्रक्रिया में सहभागिता, और शिक्षकों के सुझावों का सम्मान – ये सभी नेतृत्व से जुड़े आयाम हैं जो शिक्षक के अनुभव को प्रभावित करते हैं। मिश्रा (2018) ने पाया कि लोकतांत्रिक नेतृत्व से कार्य-संतुष्टि में उल्लेखनीय वृद्धि होती लीथवुड एवं जैंटज़ी(2006) के अनुसार, रूपांतरकारी नेतृत्व (transformational leadership) शिक्षकों में आत्मविश्वास, नवाचार और संस्थागत जुड़ाव को बढ़ाता है।

- **सामाजिक प्रतिष्ठा और संबंध (Social Prestige and Interpersonal Relations)**

शिक्षक की सामाजिक छवि और सहकर्मियों, विद्यार्थियों व अभिभावकों के साथ संबंध उसकी आत्म-छवि और संतुष्टि दोनों को प्रभावित करते हैं।कुलकर्णी (2013) ने पाया कि सामाजिक सम्मान और सहयोगात्मक संबंध शिक्षक की मनोवैज्ञानिक संतुष्टि के प्रमुख स्रोत हैं। गुप्ता (2022) के अनुसार, डिजिटल युग में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच आपसी सम्मान और संवाद का स्वरूप कार्य-संतुष्टि का नया सामाजिक आयाम बन गया

- **पेशेवर विकास (Professional Development)**

21वीं सदी में शिक्षा का परिदृश्य निरंतर बदल रहा नई तकनीकें, वैश्विक मानक और नवाचार आधारित शिक्षा ने शिक्षक की भूमिका को अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया ऐसे में शिक्षक तभी संतुष्ट महसूस करते हैं जब उन्हें निरंतर पेशेवर विकास के अवसर मिलते हैं।डार्लिंग-हैमंड एवं अन्य(2017) के अनुसार, सतत् पेशेवर विकास शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों, तकनीकी कौशल और अनुसंधान क्षमताओं से जोड़ता जब शिक्षक नए ज्ञान और कौशल सीखते हैं, तो वे कक्षा में अधिक प्रभावशाली ढंग से पढ़ा पाते हैं और अपनी पेशेवर पहचानको मजबूत करते हैं।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस बात पर बल दिया है कि शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से अद्यतन रखना आवश्यक इस प्रकार, पेशेवर विकास केवल शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने का साधन नहीं है, बल्कि यह शिक्षकों की आंतरिक संतुष्टि एवं आत्म-विश्वास को भी गहराई से प्रभावित करता शिक्षक तब संतुष्ट महसूस करते हैं जब उन्हें नई तकनीकों और शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करने का अवसर मिलता हैजिसके द्वारा वे अपने कार्य में अधिक रचनात्मक तथा आत्मनिर्भर का समावेश करते

- **कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance)**

शिक्षकों के कार्य की प्रकृति अत्यंत जटिल और बहुआयामी उन्हें केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं रहना पड़ता, बल्कि मूल्यांकन, प्रशासनिक कार्य, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ तथा अभिभावक संवाद जैसी कई जिम्मेदारियाँ भी निभानी होती हैं। इस कारण कई बार शिक्षक तनाव एवं थकानका अनुभव करते हैं, जो उनकी कार्य-संतुष्टि को प्रभावित करता है (किरियाको, 2001)।कार्य-जीवन संतुलन का अर्थ है कि शिक्षक अपने पेशेवर दायित्वों और व्यक्तिगत जीवन के बीच सामंजस्य स्थापित कर सकें। यदि कार्य का दबाव इतना अधिक हो जाए कि शिक्षक को परिवार और व्यक्तिगत जीवन के लिए समय न मिले, तो वे असंतुष्ट और मानसिक रूप से थकान महसूस करते हैं।यूनेस्को (2015) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि शिक्षा व्यवस्था को ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जहाँ शिक्षक को पर्याप्त अवकाश, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और लचीला समय-

सारणी उपलब्ध हो। इसके अलावा, कार्य-जीवन संतुलन सुनिश्चित करने से शिक्षक अधिक ऊर्जा, रचनात्मकता और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ विद्यार्थियों को पढ़ा सकते हैं।

भारत जैसे विकासशील देशों में यह चुनौती और भी बड़ी है, क्योंकि सरकारी और निजी संस्थानों में शिक्षकों पर अक्सर अत्यधिक कार्यभार और संसाधनों की कमी रहती इस संदर्भ में पेशेवर सहायता और प्रशासनिक सहयोग से शिक्षक का संतुलन बेहतर हो सकता इस प्रकार कार्य-जीवन संतुलन शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि का एक केंद्रीय आयाम है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और पेशेवर प्रदर्शन दोनों को प्रभावित करता हालाँकि नवाचार आधारित शिक्षा शिक्षण को रोचक और गतिशील बनाती है, लेकिन यह शिक्षकों पर अतिरिक्त कार्यभार भी डालती नई तकनीक का उपयोग, डिजिटल संसाधनों का निर्माण और छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण रणनीतियाँ बनाना समय और ऊर्जा दोनों की मांग करता है।

- **शिक्षण में स्वायत्तता (Autonomy in Teaching)**

शिक्षण एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, और इसमें शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं होती है। जब शिक्षक को अपनी कक्षा में स्वतंत्रता और निर्णय लेने का अधिकार मिलता है, तो वे अधिक प्रेरित और संतुष्ट महसूस करते हैं। इंगरसोल (2007) के अनुसार, शिक्षण में स्वायत्तता कार्य-संतुष्टि का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। यदि शिक्षक को पाठ्यक्रम डिजाइन करने, शिक्षण विधियाँ चुनने और मूल्यांकन की रणनीतियों में लचीलापन दिया जाए, तो उनकी रचनात्मकता और नवाचार क्षमता बढ़ती राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी यह उल्लेख किया गया है कि शिक्षक को "कक्षा में शैक्षणिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता" दी जानी चाहिए, ताकि वे विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार अपने शिक्षण को अनुकूलित कर सकें।संक्षेप में, शिक्षण में स्वायत्तता शिक्षक को केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि ज्ञान सृजनकर्ता और मार्गदर्शक के रूप में पहचान दिलाती है, यह पहचान उनके कार्य में आत्म-संतोष और समर्पण को बढ़ाती है। नवाचार आधारित शिक्षा शिक्षकों को अपने शिक्षण में अधिक स्वायत्तता प्रदान करती शिक्षक अब केवल निर्धारित पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे छात्रों की रुचि और आवश्यकता के अनुसार नए प्रोजेक्ट, समूह गतिविधियाँ और समस्या-आधारित अधिगम की योजना बना सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) और शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि

भारत की शिक्षा व्यवस्था 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने के लिए बड़े परिवर्तन से गुजर रही है। इसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को एक ऐतिहासिक कदम माना जाता है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को बहुविषयक (multidisciplinary), कौशल-आधारित (skill-based), और नवाचार-उन्मुख (innovation-driven) बनाना है। यह नीति केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षकों के पेशेवर जीवन और उनकी कार्य-संतुष्टि (job satisfaction) के लिए भी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) शिक्षकों को "राष्ट्र-निर्माता" की भूमिका में देखती है और उन्हें शिक्षा सुधार का केंद्र मानती है। इस दृष्टिकोण से यह नीति शिक्षकों के पेशेवर विकास, स्वायत्तता, कार्य-जीवन संतुलन और सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ावा देती है, जो सीधे तौर पर उनकी कार्य-संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

इक्कीसवीं सदी में शिक्षा अब छात्र-केंद्रित, लचीली, नवाचार-आधारित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित इसका उद्देश्य छात्रों को ऐसे नागरिक के रूप में शिक्षित करना है जो जटिल समस्याओं का समाधान कर सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन कर सकें तथा अपनी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ आजीवन सीखने की क्षमता रखते हों। वर्तमान समय में जब शिक्षा में इतने नवाचार को अपनाने की बात हो रही है तब शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एक जटिल अवधारणा के रूप में हम सभी के समक्ष है जो उनके पेशेवर जीवन एवं समग्र शिक्षा, दोनों को प्रभावित करती है। कार्य-जीवन संतुलन उनके भावनात्मक व शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखता है, व्यावसायिक विकास उन्हें सूचित तथा सशक्त बनाता है, और शिक्षण में स्वायत्तता उन्हें प्रेरित व रचनात्मक बनाए रखती हैं। पूर्व के अध्ययनों के अनुसार, ये तत्व शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि में बाधा भी बन सकते हैं। इस संबंध में शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि में सुधार के लिए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) एक व्यापक और नवीन रणनीति प्रदान करती है। इस नीति के अंतर्गत शिक्षकों को कार्य-जीवन संतुलन, शैक्षणिक स्वायत्तता, व्यावसायिक विकास और सामाजिक स्थिति का लाभ मिलेगा। यदि इन शर्तों का सफलतापूर्वक पालन किया जाता है, तो शिक्षक अधिक खुश रहने के साथ-साथ छात्रों को बेहतर शिक्षा भी दे सकेंगे। इस प्रकार, राष्ट्रीय

शिक्षा नीति (2020) शिक्षक सशक्तिकरण और कार्य प्रसन्नता के साथ-साथ शिक्षा सुधार एजेंडा के लिए एक ऐतिहासिक पहल है जो शिक्षकों को सशक्त बनाने के साथ विद्यार्थियों और समाज के लिए भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करेगी। शिक्षकों की संतुष्टि ही वह आधार है जिस पर नवाचारपूर्ण, समावेशी और भविष्य-उन्मुख शिक्षा व्यवस्था का निर्माण संभव है।

संदर्भ सूची

1. ओइसीडी. (2020). टीचिंग एंड लर्निंग इंटरनेशनल सर्वे (TALIS) 2020 रिज़ल्ट्स. पेरिस: ओइसीडी पब्लिशिंग. https://doi.org/10.1787/1d0bc92a-en
2. ओइसीडी. (2018). द फ्यूचर ऑफ़ एजुकेशन एंड स्किल्स: एजुकेशन 2030. ओइसीडी पब्लिशिंग.https://www.oecd.org/education/2030
3. एनसीएफ (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद.
4. इंगरसोल, आर. (2007). शार्ट ऑन पॉवर, लांग ऑन रेस्पोंसिबिलिटी. एजुकेशनल लीडरशिप, 65(1), 20–25.
5. कुमार, आर., एंड रानी, एस. (2016). वर्क-लाइफ बैलेंस एंड जॉब सैटिस्फैक्शन अमंग टीचर्स इन हायर एजुकेशन. इंडियन जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी एंड एजुकेशन, 6(1), 60–68.
6. कुलकर्णी, पी. (2013). अ स्टडी ऑफ़ जॉब सैटिस्फैक्शन ऑफ़ स्कूल टीचर्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 2(4), 42–45.
7. किरियाको, सी. (2001). टीचर स्ट्रेस: डायरेक्शनसफॉर फ्यूचर रिसर्च.एजुकेशनलरिव्यू, 53(1), 27–35. https://doi.org/10.1080/00131910120033628
8. ग्रीनहॉस, जे. एच., एंड ब्यूटेल, एन. जे. (1985). सोर्सऑफ़ कनफ्लिक्ट बिटवीन वर्क एंड फैमिली रोल्स. एकेडमी ऑफ़ मैनेजमेंट रिव्यू, 10(1), 76–88.
9. गुप्ता, एस. (2022). टीचर जॉब सैटिस्फैक्शन इन द डिजिटल ऐज: अ स्टडी ऑफ़ हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स. जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च, 45(2), 89–102.
10. डार्लिंग-हैमंड, एल., हाइलर, एम. ई., एंड गार्डनर, एम. (2017). इफेक्टिव टीचर प्रोफेशनल डेवलपमेंट. पालो ऑल्टो, सीए: लर्निंग पॉलिसी इंस्टीट्यूट. https://learningpolicyinstitute.org/sites/default/files/product-files/Effective_Teacher_Professional_Development_REPORT.pdf
11. डार्लिंग-हैमंड, एल., फ्लुक, एल., कुक-हार्वे, सी., बैरन, बी., एंड ऑशर, डी. (2020). इम्पलीकेशनस फॉर एजुकेशनल प्रैक्टिस ऑफ़ द साइंस ऑफ़ लर्निंग एंड डेवलपमेंट. एप्लाइड डेवलपमेंटल साइंस, 24(2), 97–140. https://doi.org/10.1080/10888691.2018.1537791
12. पाठक. पी. डी. पाठक. (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
13. बोंक, सी. जे., एंड ग्राहम, सी. आर. (2012). द हैंडबुक ऑफ़ ब्लेंडेड लर्निंग की हैंडबुक: ग्लोबल पर्सपेक्टिव्स, लोकल डिज़ाइन. जॉन विली एंड संस. https://books.google.co.in/books?id=mvfXEAAAQBAJ
14. भटनागर, सु. (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
15. मंगल, एस. के. (2010), शिक्षा मनोविज्ञान, पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
16. मनका, एस., एंड रानिएरी, एम. (2016). फेसबुक एंड द अदरस: पोटेंशियल एंड ऑब्स्टेकल्स ऑफ सोशल मीडिया फॉर टीचिंग इन हायर एजुकेशन. कंप्यूटर्स एंड एजुकेशन, 95, 216-230. https://doi.org/10.1007/s10639-015-9429-x
17. मलिक, एम. ई., नवाब, एस., एंड नईम, बी. (2010). जॉब सैटिस्फैक्शन एंड ऑर्गेनाइज़ेशनल कमिटमेंट ऑफ़ यूनिवर्सिटी टीचर्स इन पाकिस्तान. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ बिज़नेस एंड मैनेजमेंट, 5(6), 17–26.

18. मिश्रा, पी. (2018). इम्पैक्ट ऑफ़ ऑर्गेनाइज़ेशनल क्लाइमेट ऑन जॉब सैटिस्फैक्शन ऑफ़ टीचर्स. एजुकेशनल रिव्यू, 10(3), 45–55.
19. यूनेस्को. (2015).इन्फॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (ICT) इन एजुकेशन.यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज़ इन एजुकेशन.
20. लीथवुड, के., एंड जैंटज़ी, डी. (2006). ट्रांसफॉर्मेशनल स्कूल लीडरशिप फॉर लार्ज-स्केल रिफार्म: इफेक्ट्स ऑन स्टूडेंट्स, टीचर्स, एंड देयर क्लासरूम प्रैक्टिस. स्कूल इफेक्टिवनेस एंड स्कूल इम्प्रूवमेंट, 17(2), 201–227.
21. लॉक, ई. ए. (1976). द नेचर एंड काउसेस ऑफ़ जॉब सैटिस्फैक्शन. इन एम. डी. डननेट (एड.), हैंडबुक ऑफ़ इंडस्ट्रियल एंड ऑर्गेनाइज़ेशनल साइकोलॉजी (पेज 1297–1349). शिकागो: रैंड मैकनली.
22. लुकिन, आर., होल्मस, डब्ल्यू., ग्रिफिथ्स, एम., एंड फोर्सियर, एल. बी. (2016). इंटेलिजेंस अनलीश्ड: अन आर्गुमेंट फॉर एआई इन एजुकेशन. पियर्सन. https://www.pearson.com/content/dam/corporate/global/pearson-dot-com/files/innovation/open-ideas/Intelligence-Unleashed-Publication.pdf
23. सिंह, अ. कु. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पटना.
24. शर्मा, आर. (2000). स्टेटस ऑफ़ जॉब सैटिस्फैक्शन अमंग कॉलेज टीचर्स. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 36(1), 65–72.
25. शिक्षा मंत्रालय. (2020).नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार.https://www.education.gov.in/nep2020
26. हर्ज़बर्ग, एफ. (1968). वन मोरे टाइम: हाउ डू यू मोटिवेट एम्प्लाइज?हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू, 46(1), 53–62.
27. स्चलेचटी, पी. सी. (2011). इंगेजिंग स्टूडेंट्स : द नेक्स्ट लेवल ऑफ़ वर्किंग ऑन द वर्क (सेकंड एडिशन). जोसी-बास.https://www.vitalsource.com/products/engaging-students-phillip-c-schlechty-v9781118015520
28. https://www.simplypsychology.org/herzbergs-two-factor-theory.html
29. https://www.researchgate.net/publication/262639924_Herzberg's_Two-Factor_Theory_on_Work_Motivation_Does_it_Works_for_Todays_Environment